पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –X

HINDI

JUNE Month

2020

g´-wag

pa#-Ô

Dayrl kepNnesltaram sek sirya

Ó-leqk ka pircy:

Ô-pa# ka sar:

Õ-xBda4R

Ö-pXn-]Ttr:

×-Vyakr` -si2

g´-wag

pa#-Ô

Dayrl kepNnesItaram sekksirya

leqk ka pircy:-

***-सीताराम सेकसरिया** को समाज सेवा के क्षेत्र में सन १९६२ में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। ये असम राज्य से हैं।

सीताराम सेकसरिया एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता , गांधीवादी , समाजवादी और पश्चिम बंगाल के संस्था बिल्डर थे , जो मारवाड़ी समुदाय के उत्थान के लिए उनके योगदान के लिए जाने जाते थे । वह एक उच्च विद्यालय संस्थान, मारवाड़ी बालिकिका विद्यालय, समाज सुधार समिति , एक सामाजिक संगठन और भारतीय भाषा परिषद , उच्च शिक्षा संस्थान, श्री शिक्षाशाटन सहित कई संस्थानों और संगठनों के संस्थापक थे। एक गैर सरकारी संगठन भारत सरकार ने समाज में उनके योगदान के लिए उन्हें 1 9 62 में पद्म भूषण का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया। उनके जीवन की कहानी एक किताब, पद्म भूषण सीताराम सेकसरिया अभिनंदन ग्रंथ में प्रकाशित की गई है , जिसे भावरमल सिंह द्वारा संपादित किया गया है और 1 9 74 में प्रकाशित किया गया था

Þ-pa# ka sar:-

'डायरी का एक पन्ना' पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी 1931 का वर्णन किया है। 26 जनवरी 1931 को गुलाम भारतवर्ष में दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्तावासियों ने आज़ादी के इस जश्न में बढ़-चढ़कर भाग लिया। बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर झंडे फहर रहे थे। पूरे कलकत्ता की रौनक देखते ही बनती थी। जिस रास्ते पर मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह एवं नवीनता मालूम होती थी। दूसरी तरफ़ अंग्रेज सरकार भी इस आंदोलन को विफल करने में पूरी ताकत से जुटी हुई थी। इस आंदोलन की सफलता सरकार की विफलता थी अतः पुलिस की तरफ़ से भी कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए थे। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। आंदोलन ज्यों-ज्यों उग्र होता जा रहा था त्यों-त्यों पुलिस का दमन चक्र भयंकर रूप लेता जा रहा था। पुलिस ने जुलूस पर लाठी चार्ज किया। इस लाठी चार्ज में अनेक लोग घायल हुए। क्षितीश चटर्जी का सिर फट गया। वृजलाल गोयनका को एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी से मारा और पकड़ कर दूर तक घसीटा। स्त्री कार्यकर्त्ताओं पर भी जमकर लाठी चार्ज किया गया। अंग्रेजों के इस अत्याचार के चलते 160 से भी अधिक आदमी बुरी तरह से घायल हो गए थे। लगभग 105 स्त्रियों को लाल बाज़ार लॉकअप में ले जाया गया। पर कलकत्तावासियों ने अंग्रेज़ों के इस अत्याचार का मुँह तोड़ जवाब दिया। पुलिस द्वारा निर्ममता से लाठी चार्ज करने पर भी विभिन्न पार्कों एवं मोनुमेंट पर भारी तादाद में पहुँचकर; झंडा फहराकर तथा शपथ-पत्र पढ़कर कलकत्तावासियों ने यह सिद्ध कर दिया कि अब वे सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों से नहीं डरते।

कौंसिल की तरफ़ से यह निर्णय लिया गया था कि ठीक चार बजकर दस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे ध्वज फहराया जाएगा। सुभाष बाबू जुलूस लेकर जब आए, तो उन्हें चौरंगी पर ही रोका गया, परंतु भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस उन्हें रोक नहीं सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं। बहुत आदमी घायल हुए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। सुभाष बाबू बहुत ज़ोरों से वंदे मातरम् बोल रहे थे। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी के सिर पर लाठी लगी और उनका सिर फट गया। बहुत खून बहा, उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर तिरंगा फहरा रहीं थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। प्रायः सबके पास झंडा था। वालेंटियर लाठी पड़ने पर भी अपने स्थान से पीछे नहीं हट रहे थे। सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर उन्हें लाल बाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही बहुत बड़ी संख्या में स्त्रियाँ वहाँ इकट्ठी हो गईं, परंतु पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दी। इस बार बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस तितर-बितर हो गया। 50-60 स्त्रियाँ वहीं बैठ गईं। जिन्हें पुलिस ने लाल बाज़ार लॉकअप में डाल दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ गया, जिन्हें बहू बाज़ार के मोड़ पर रोका दिया गया। वृजलाल गोयनका ध्वज लेकर मोनुमेंट की ओर इतनी तेज़ दौड़ा कि स्वयं गिर पड़ा। पुलिस ने उसे पकड़ लिया और कुछ देर बाद छोड़ दिया। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं थीं।

þ- xBda4R

-pUavi-Tt-ifr seAans

-Apnehm ya mea

-gXt-6ul-6ul kr c0kldarl krna

-sarj8-sea ka pd

-monme8-Smark

-k0is l-pir8d\

-c0rgl-k l kTteka 0k S4an

-vale3yr-Svy.sek

-sgln-gwlr

pŇn0Ţtr:-

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (10-12 शब्दों में) लिखिए –**

1-कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

1-देश का स्वतंत्रता दिवस एक वर्ष पहले इसी दिन मनाया गया था। इससे पहले बंगाल वासियों की भूमिका नहीं थी। अब वे प्रत्यक्ष तौर पर जुड़ गए। इसलिए यह महत्वपूर्ण दिन था।

2-सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

2-सुभाषा बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था परन्तु पूलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

3-विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

3-बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जैसे ही झंडा गाड़ा, पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और लोगों पर लाठियाँ चलाई।

4-लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

4-लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर बताना चाहते थे कि वे अपने को आज़ाद समझ कर आज़ादी मना रहे हैं। उनमें जोश और उत्तसाह है।

5-पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों और मैदानों को क्यों घेर लिया था?

5-आज़ादी मनाने के लिए पूरे कलकत्ता शहर में जनसभाओं और झंडारोहण उत्सवों का आयोजन किया गया। इसलिए पार्कों और मैदानों को घेर लिया था।

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –**

1-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं ?

1-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए कलकत्ता शहर ने शहर में जगह-जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले गए तथा झंड़ा फहराया गया था। टोलियाँ बनाकर भीड़ उस स्थान पर जुटने लगी जहाँ सुभाष बाबू का जुलूस पहुँचना था। पुलिस की लाठीचार्ज तथा गिरफ़तारी लोगों के जोश को कम न कर पाए।

2-आज जो बात थी वह निराली थी' – किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

2-आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि स्वतंत्रता दिवस मनाने की प्रथम आवृत्ति थी। पुलिस ने सभा करने को गैरकानूनी कहा था किंतु सुभाष बाबू के आह्वान पर पूरे कलकत्ता में अनेक संगठनों के माध्यम से जुलूस व सभाओं की जोशीली तैयारी थी। पूरा शहर झंडों से सजा था तथा कौंसिल ने मोनुमेंद के नीचे झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का सरकार को खुला चैलेंज दिया हुआ था। पुलिस भरपूर तैयारी के बाद भी कामयाब नहीं हो पाई।

3-पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

3-पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी जनसभा करना या जुलूस निकालना कानून के खिलाफ़ होगा। सभाओं में भाग लेने वालों को दोषी माना जाएगा। कौंसिल ने नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। इस प्रकार ये दोनों नोटिस एक दुसरे के खिलाफ़ थे।

4-धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

4-जब सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया तो स्त्रियाँ जुलूस बनाकर चलीं परन्तु पुलिस ने लाठी चार्ज से उन्हें रोकना चाहा जिससे कुछ लोग वहीं बैठ गए, कुछ घायल हो गए और कुछ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। इसलिए जुलूस टूट गया।

5-डा. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर रहे थे, उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फ़ोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

5-डा. दास गुप्ता लोगों की फ़ोटो खिचवा रहे थे। इससे अंग्रेज़ों के जुल्म का पर्दाफ़ाश किया जा सकता था, दूसरा यह भी पता चल सकता था कि बंगाल में स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत काम हो रहा है।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

1-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

1-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। भारी पुलिस व्यवस्था के बाद भी जगह-जगह स्त्री जुलूस के लिए टोलियाँ बन गई थीं। मोनुमेंट पर भी स्त्रियों ने निडर होकर झंडा फहराया, अपनी गिरफ्तारियाँ करवाई तथा उनपर लाठियाँ बरसाई। इनसब के बाद भी स्त्रियाँ लाल बाज़ार तक आगे बढ़ती गईं।

2-जुलूस के लाल बाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

2-जुलूस के लाल बाज़ार आने पर भीड़ बेकाबू हो गई। पुलिस डंडे बरसा रही थी, लोगों को लॉकअप में भेज रही थी। स्त्रियाँ भी अपनी गिरफ़्तारी दे रही थीं। दल के दल नारे लगा रहे थे। लोगों का जोश बढ़ता ही जा रहा था। लाठी चार्ज से लोग घायल हो गए थे। खून बह रहा था। चीख पुकार मची थी फिर भी उत्साह बना हुआ था।

3-जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

3-इस समय देश की आज़ादी के लिए हर व्यक्ति अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार था। अंग्रेज़ों ने कानून बनाकर आन्दोलन, जुलूसों को गैर कानूनी घोषित किया हुआ था परन्तु लोगों पर इसका कोई असर नहीं था। वे आज़ादी के लिए अपना प्रदर्शन करते रहे, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करते रहे थे।

4-बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

4-सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में कलकत्ता वासियों ने स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी ज़ोर-शोर से की थी। पुलिस की सख्ती, लाठी चार्ज, गिरफ़तारियाँ, इन सब के बाद भी लोगों में जोश बना रहा। लोग झंडे फहराते, वंदे मातरम बोलते हुए, खून बहाते हुए भी जुलूस निकालने को तत्पर थे। जुलूस टूटता फिर बन जाता। कलकत्ता के इतिहास में इतने प्रचंड रूप में लोगों को पहले कभी नहीं देखा गया था।

आशय स्पष्ट कीजिए –

1-आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

1-हजारों स्त्री पुरूषों ने जुलूस में भाग लिया, आज़ादी की सालगिरह मनाने के लिए बिना किसी डर के प्रदर्शन किया। पुलिस के बनाए कानून कि, जुलूस आदि गैर कानूनी कार्य, आदि की भी परवाह नहीं की। पुलिस की लाठी चार्ज होने पर लोग घायल हो गए। खून बहने लगे परन्तु लोगों में जोश की कोई कमी नहीं थी। बंगाल के लिए कहा जाता था कि स्वतंत्रता के लिए बहुत ज़्यादा योगदान नहीं दिया जा रहा है। आज की स्थिति को देखकर उन पर से यह कंलक मिट गया।

2-खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी?

2- पुलिस ने कोई प्रदर्शन न हो इसके लिए कानून निकाला कि कोई जुलूस आदि आयोजित नहीं होगा परन्तु सुभाष बाबू की अध्यक्षता में कौंसिल ने नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिक्षा पढ़ी जाएगी। सभी को इसके लिए आंमत्रित किया गया, खूब प्रचार भी हुआ। सारे कलकत्ते में झंडे फहराए गए थे। सरकार और आम जनता में खुली लड़ाई थी।

Vyakr`-si2

VyaQya:-1-**संधि शब्द का अर्थ है 'मेल'। दो निकटवर्ती वर्णों के आपसी मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहलाता है। सम् + तोष = संतोष देव + इंद्र = देवेंद्र भानु + उदय = भानूदय**

संधि तीन प्रकार है

1-स्वर संधि.

2- व्यंजन संधि

3- विसर्ग संधि

1) स्वर संधि:-

दो स्वरों के आस -पास आने पर उनमें जो परिवर्तन होता है , उसे स्वर संधि कहते है। जैसे – विद्या + आलय = विद्यालय।

1) **दीर्घ स्वर संधि**

अ इ उ के बाद दीर्घ अ इ उ आ जाए तो दोनो मिलकर दीर्घ संधि आ ई ऊ हो जाते है।

अ + आ = आ हिम + आलय = हिमालय

इ + ई = ई - गिरि + ईश = गिरीश

ई + इ = ई - मही + इंद्र = महींद्र

ई + ई = ई - नदी + ईश = नदीश

उ + ऊ = ऊ- लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

ऊ + उ = ऊ- वधू + उत्सव = वधूत्सव

ऊ + ऊ = ऊ - भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

2) **गुण स्वर संधि :-**इस संधि मे अ, आ के आगे इ , ई हो तो ए उ, ऊ हो तो औ और अगर ऋ हो तो अर् हो जाता है उसे गुण संधि कहते है।

अ + इ = ए- नर + इंद्र = नरेंद्र अ + ई = ए- नर + ईश = नरेश

आ + इ = ए- महा + इंद्र = महेंद्र आ + ई = ए महा + ईश = महेश

अ + उ = ओ ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश आ+उ= ओ महा + उत्सव = महोत्सव

3) **यण स्वर संधि:-** इस संधि मे इ , ई , उ , ऊ ,और ऋ के बाद कोई अलग स्वर आए तो इनका परिवर्तन क्रमश: य , व् और र में हो जाता है !

इ का य = इति +आदि = इत्यादि ई का य = देवी +आवाहन = देव्यावाहन

उ का व = सु +आगत = स्वागत ऊ का व = वधू +आगमन = वध्वागमन

4) वृद्धि स्वर संधि:- , आ + ए ऐ -> ऐ

अ, आ + ओ औ -> औ

अ +ए =ऐ एक +एक = एकैक अ +ऐ =ऐ मत +ऐक्य = मतैक्य

अ +औ=औ परम +औषध = परमौषध आ +औ =औ महा +औषध = महौषध

आ +ओ =औ महा +ओघ = महौघ

5)अयादि स्वर संधि:- इस संधि मे ए , ऐ और ओ , औ के पशचात इन्हें छोड़कर को अन्य स्वर हो तो इनका परिवर्तन क्रमश: अय , आय , अव , आव में हो जाता है)

ए का अय ने +अन = नयन ऐ का आय नै +अक = नायक

ओ का अव पो +अन = पवन औ का आव पौ +अन = पावन

न का परिवर्तन ण में = श्रो +अन = श्रवण

2)व्यंजन संधि:- व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रुपान्तरण होता है , उसे व्यंजन संधि कहते हैं

प्रति+छवि=प्रतिच्छवि दिक्+अन्त=दिगन्त

दिक्+गज=दिग्गज अनु+छेद=अनुच्छेद

अच +अन्त = अजन्त

3)विसर्ग संधि :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है , उसे विसर्ग संधि कहते हैं !

मन:+रथ=मनोरथ यश:+अभिलाषा=यशोभिलाषा

अध:+गति=अधोगति नि:+छल=निश्छल

दु: +गम = दुर्गम